प्रभा खेतान के उपन्यासों में नारी के प्रभावशाली व्यक्तित्व का अध्ययन

Mohan Lal, Research Scholar, Shri Krishna University, Chhatarpur (M.P.)

सारांश

हिंदी साहित्य में प्रभा खेतान का योगदान नारी चेतना, स्त्री अस्मिता और महिला सशक्तीकरण के संदर्भ में अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। उनके उपन्यासों में नारी जीवन के विविध पक्षों, उसकी सामाजिक, पारिवारिक, आर्थिक एवं मानसिक स्थितियों का यथार्थपरक चित्रण देखने को मिलता है। प्रभा खेतान ने अपने साहित्य के माध्यम से स्त्री के अस्तित्व, स्वतंत्रता, आत्मसम्मान, अधिकारों तथा उसकी पहचान से जुड़े प्रश्नों को प्रमुखता से उठाया है। उनके उपन्यासों की नारी केवल सामाजिक बंधनों और पुरुषवादी मानसिकता से संघर्ष करने वाली स्त्री ही नहीं, बल्कि अपने निर्णय स्वयं लेने वाली, आत्मनिर्भर, साहसी एवं प्रभावशाली व्यक्तित्व की धनी महिला के रूप में सामने आती है।

प्रस्तुत शोध का मुख्य उद्देश्य प्रभा खेतान के उपन्यासों में चित्रित नारी के प्रभावशाली व्यक्तित्व का अध्ययन करना है। इसमें नारी के आत्मविश्वास, स्वाभिमान, संघर्षशीलता, निर्णय क्षमता, बौद्धिक चेतना, आर्थिक स्वतंत्रता तथा सामाजिक जागरूकता का विश्लेषण किया जाएगा। लेखिका ने स्त्री के अंतर्मन में चलने वाले द्वंद्व, उसकी इच्छाओं, आकांक्षाओं, पीड़ा और स्वतंत्र अस्तित्व की तलाश को प्रभावशाली ढंग से अभिव्यक्त किया है। उनके उपन्यासों में स्त्री पात्र परंपरागत रूढ़ियों, सामाजिक विषमताओं तथा पुरुष प्रधान व्यवस्था को चुनौती देते हुए अपनी अलग पहचान स्थापित करने का प्रयास करते हैं।

प्रभा खेतान की रचनाओं में नारी व्यक्तित्व का चित्रण केवल व्यक्तिगत संघर्ष तक सीमित नहीं है, बल्कि वह व्यापक सामाजिक परिवर्तन और स्त्री मुक्ति की चेतना से भी जुड़ा हुआ है। इस प्रकार प्रस्तुत शोध के माध्यम से यह स्पष्ट करने का प्रयास किया जाएगा कि प्रभा खेतान के उपन्यासों में नारी किस प्रकार अपनी कमजोरियों और परिस्थितियों पर विजय प्राप्त कर एक स्वतंत्र, आत्मनिर्भर एवं प्रभावशाली व्यक्तित्व के रूप में विकसित होती है। उनका साहित्य समकालीन समाज में स्त्री की बदलती भूमिका और उसकी अस्मिता को समझने का महत्त्वपूर्ण आधार प्रस्तुत करता है।

मुख्य शब्द: प्रभा खेतान, नारी चेतना, स्त्री अस्मिता, नारी सशक्तीकरण, नारी व्यक्तित्व, स्त्री विमर्श, आत्मनिर्भरता, नारी स्वाभिमान, पुरुष प्रधान व्यवस्था, स्त्री संघर्ष, सामाजिक चेतना, महिला स्वतंत्रता